हिमाचल अभी अभी

नई सोच नई खोज

साप्ताहिक

/himachal.abhiabhi @himachal_abhi

RNI No. HPHIN/2015/68432 वर्ष 9 अंक 46 कांगड़ा। शनिवार, 13 अप्रैल-19 अप्रैल, 2024 www.himachalabhiabhi.com तदनुसार 01 वैशाख, विक्रमी संवत् 2081 कुल पृष्ठ 12 मूल्य ₹5 | Postal Regn.No. DGPUR/26/24-26

हाईकोर्ट में निर्दलीय की याचिका पर सुनवाई -पढ़ें पेज 2 पर

दुर्गा अष्टमी

नवरात्र की अष्टमी तिथि के दिन मां दुर्गा के स्वरूम मां गौरी की पूजा–अर्चना की जाती है। अष्टमी के दिन कई घरों में कुल देवी या कुल देवता की पूजा भी की जाती है। इस साल दुर्गा अष्टमी 16 अप्रैल, मंगलवार को है। कुछ लोग दुर्गा अष्टमी के दिन नवरात्र का समापन करते हुए इसी दिन हवन और कन्या पूजन करते हैं। वहीं ज्यादातर लोग नवमी के दिन नवरात्रि का समापन करते हुए महानवमी को हवन और कन्या पूजन करते हैं। महानवमी को राम नवमी भी कहते हैं क्योंकि इस दिन प्रभु राम का जन्मोत्सव मनाया जाता है। अष्टमी–नवमी की पूजा में माताराणी को पूरी–हलवा और चने का भोग जरूर लगाना चाहिए।

● कब है महाअष्टमी

पंचांग के अनुसार, नवरात्र अष्टमी तिथि का आरंभ 15 अप्रैल को दोपहर में 12 बजकर 12 मिनट से होगा और इसका समापन 16 अप्रैल को दोपहर 1 बजकर 22 मिनट पर होगा। उदया तिथि में अष्टमी तिथि 16 अप्रैल को होने के कारण महाअष्टमी, कन्या पूजन 16 अप्रैल को किया जाएगा। जबकि नवमी तिथि 17 अप्रैल को है।

शास्त्रों के अनुसार, कन्या पूजन के दौरान बटुक की पूजा भी की जाती है। कन्या पूजन के दौरान कन्याओं को खाना आदि खिलाने के साथ साथ उन्हें उपहार आदि भी दिया जाता है। साथ ही बटुक की पूजा भी जाती है। कन्या पूजन के दौरान कन्याओं को लाल कपड़े में थोड़े से चावलों के साथ एक रुपए का सिक्का अवश्य दें। ऐसा करने से मां लक्ष्मी का वास आपके घर में हमेशा रहेगा।

■ पं. कुलदीप शास्त्री